क़िशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावक शैलियों एवं उनके सामाजिक आर्थिक स्तर से संबंध का अध्ययन।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

निर्देशिका
प्रो.डॉ. मंजू शर्मा
शिक्षा विभागाध्यक्ष

शोधकर्त्ता
कविता शर्मा
JVR-1/20/3016

शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग,
अनुसंधान और कार्यप्रणाली संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान) भारत

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका जन्म वृद्धि विकास और अंत इसी समाज के भीतर संभव है अर्थात् वह समाज से अलग होकर नहीं रह सकता है बालक जन्म से सामाजिक से अलग होकर नहीं रह सकता है मनुष्य जन्म से सामाजिक न होकर समाज के सम्पर्क में आकर सामाजिक बनता है तथा समाज की मान्यताओं के अनुरूप कार्य करता है समाज में रहकर अपनी आवश्यकतओं की पूर्ति करता है। समाज में रहकर ही वह अपने उद्देश्यों व लक्ष्यों की पूर्ति करता है।

समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है जो बालक की प्रथम पाठशाला मानी जाती है घर, कुटुम्ब अथवा परिवार मानव–समाज की प्राचीनतम एवं आधारभूति इकाई एक ऐसा समूह है जिसमें बूढे, जवान, पति–पत्नि तथा उनके बच्चे होते हैं। ये सब एक–दूसरे से माता–पिता, भाई–बहिन अथवा किसी अन्य सीधे सम्बंध से सम्बन्धित होते हैं।

नवजात शिशु अपने जीवन की यात्रा को परिवार से ही आरम्भ करता है तथा इसी संस्था में रहते हुए विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्राप्त होती है। जैसे–जैसे बालक की आयु में वृद्धि होती है। वैसे–वैसे परिवार द्वारा उसमें उन सभी मानवीय गुणों का विकास होता है। जिनकी आवश्यकता उसे आगे चलकर एक सुयोग्य एवं सच्चरित्र नागरिकों के रूप में पड़ती है। बालक को बनाने और बिगाडने का उत्तरदायित्व अब भी परिवार पर ही है।

परिवार में रहते हुए बालक को यूँ तो अनेक सुविधाये मिलती रहती है परन्तु प्रत्येक परिवार दो महत्वपूर्ण बातों की पूर्ति अवश्य करता है।

1. स्नेह
2. सामाजीकरण

शैशव अवस्था में बालक का मस्तिष्क अत्यधिक ग्राह्म होता है परिवार के स्नेहपूर्ण वातावरण से प्रभावित होते हुए वह अपने परिवार की भाषा, संस्कृति, वेशभूषा, आचार–विचार, आहार–विहार तथा रूचियों को स्वभाविक रूप से ग्रहण कर लेता है इस प्रकार पारिवारिक शिक्षा बालक के व्यक्तित्व की ऐसी आधारशिला बन जाती है जिसे वह जीवन पर्यन्त कभी नहीं भूलता।

परिवार का मुखिया या संचालक या संरक्षक होता है और उसके द्वारा ही बच्चों की देखभाल, लालन–पालन शिक्षण आदि कार्य सम्पादित किये जाते है अभिभावक अपने दायित्वों का वहन करते हुए परिवार को चहुँमखी विकास का आधार प्रदान करते हैं।

अभिभावक व संतान का संबंध अत्यंत निकटता व आत्मीयता का संबंध होता है प्रत्येक माता–पिता अपनी संतान को यथा संभव सुविधाएँ देने का प्रयास करते है। सदैव उसकी हितों की चिंता करते है तथापि मानव स्वभाव की विभिन्नता व परिस्थितियों की विभिन्नता व विविधता के कारण उसके माता–पिता का बालक की रूचियों के प्रत्येक पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है बालक के स्वभाव उसके व्यवहार व उसकी सभी गतिविधियों में परिलक्षित होता है बालक में गुणों की नींव बचपन में ही पड़ जाती है माता–पिता के शिक्षित होने से बालक के अच्छे गुणों का भी समावेश प्रारम्भ होता है।

बालक में सदाचारों संस्कारों, मूल्यों के विकास तथा बालक में स्वयं के प्रति विश्वास विकसित करने का आधार उसका पारिवारिक वातावरण है परिवार अपने आप में अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों आचरणों एवं व्यवहारो का अवलोकन करता है बालक के प्रथम शिक्षक उसके माता–पिता और विद्यालय उसका घर होता है जो जीवन पर्यन्त बालक का पथ–प्रदर्शन करते हुए उसे प्रगति की ओर ले जाता है।

बाल विकास में माता–पिता का व्यापक योगदान होता है जिसमें मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक जुडा रहता है। प्रत्येक अभिभावक अपनी–अपनी परम्पराओं के अनुसार कार्य करते है।

अभिभावक के व्यवहार के अनुरूप बालक सहानुभति, उदारता, न्यायप्रियता, सत्यता जैसे गुणों को ग्रहण करता है व अपने विचारों को व्यक्त करना परिवार से ही सिखता है। अतः यह आवश्यक है कि उचित सामाजिक तथा व्यक्तित्व विकास के लिए माता–पिता बालक में उचित नैतिक गुण उत्पन्न होते है।

ऐसे अभिभावक की जो स्वतंत्रता बच्चों की क्षमता पर निर्भर है ऐसे अभिभावक बच्चे के सामने अवसर प्रदार करें। वे बच्चे को समस्या का समाधान करने के अवसर दें और अंत में

उसके परिणामों की जांच करें और अंत में सही गलत सुझाव द्वारा समझानें का प्रयास करना चाहिए।

बालक जैसे ही विद्यालय में प्रवेश करता है तो उसके व्यवहार में संशोधन होता है और बालक में नया दृष्टिकोण विकसित होता है।

शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा–कक्ष का वातावरण पारिवारिक, आर्थिक स्तर, सामाजिक, धार्मिक स्थिति पारिवारिक समायोजन विधालयी समायोजन, माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति व्यवहार, किशोरावस्था, बाल्यावस्था आदि घटक प्रभावित करते है।

सामाजिक स्तर से तात्पर्य है कि विद्यार्थी का समाज में सामान्य व निम्न या उच्च स्तर कैसा है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा व समाज के प्रति वह कितना उत्तरदायी है। यदि विधार्थी का सामाजिक स्तर निम्न है तो उसके व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास नहीं हो पाता है।

आर्थिक स्तर वह होता है जिससे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता होता है समाज में कुछ व्यक्ति निर्धन होते है और कुछ व्यक्ति धनी होते है जिन विधार्थियों का आर्थिक स्तर अच्छा होता है उन्हें सभी आर्थिक सुख सुविधाऐं प्राप्त होती है उनके व्यक्तित्व व शिक्षा का विकास भी अधिक होता है।

सामाजिक आर्थिक स्तर अर्थव्यवस्था एवं समाज शास्त्र का सम्मिलित रूप है जिसके अन्तर्गत कार्य अनुभवी और परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का मापन किया जाता है। जो उनकी आय, शिक्षा व व्यवसाय पर निर्भर करता है जो उनकी आय, शिक्षा व व्यवसाय पर निर्भर करता है। जब विद्यार्थी के सामाजिक आर्थिक स्तर का विश्लेषण किया जाता है तथा हाउस होल्ड आय, शिक्षा व व्यवसाय व जाति को भी देखा जाता है सामाजिक आर्थिक स्तर सामान्य व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर जो परिवार, व्यवसाय और उनके व्यक्ति स्तर को विश्लेषित करता है।

अभिभावक परिवार के मुख्य प्रधान होते है और उनका अच्छा व्यवहार व गुण बालक पर अच्छा प्रभाव डालते है। अभिभावक केवल परिवार के वातावरण पर ही नही बल्कि परिवार

के पड़ौस के वातावरण का भी निर्माण करने में समुचित योग प्रदान करते है। अभिभावकों को अपने परिवार के वातावरण को आर्थिक सामाजिक बौद्धिक व सांस्कृतिक रूप से ऊँचा उठाने का प्रयास सदैव करते रहना चाहिए जिससे कि बालक का सम्पूर्ण विकास में हो सके। अभिभावकों की निष्ठावान होकर अपने दायित्वों या कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए ताकि बालक में भी दायित्व व कर्तव्यों जैसे गुणों का विकास हो सके।

समस्या का औचित्य

अभिभावक परिवार के मुख्य प्रधान होते है और उनका अच्छा व्यवहार व गुण बालक पर अच्छा प्रभाव डालते है। अभिभावक केवल परिवार के वातावरण पर ही नही बल्कि परिवार के पड़ौस के वातावरण का भी निर्माण करने में समुचित योग प्रदान करते है। अभिभावकों को अपने परिवार के वातावरण को आर्थिक सामाजिक बौद्धिक व सांस्कृतिक रूप से ऊँचा उठाने का प्रयास सदैव करते रहना चाहिए जिससे कि बालक का सम्पूर्ण विकास में हो सके। अभिभावकों की निष्ठावान होकर अपने दायित्वों या कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए ताकि बालक में भी दायित्व व कर्तव्यों जैसे गुणों का विकास हो सके।

परन्तु कई बार अभिभावकों को नकारात्मक पुनर्बलन भटकाव की स्थिति ला देता है अतः इन सामाजिक व पारिवारिक स्थितियों को देखते हुए शोधकर्त्री के मनो मस्तिष्क में निम्नलिखित प्रश्न उल्लेखित हुएः–

1. विभिन्न अभिभावक शैलियाँ किशोर बालकों के विकासको शैक्षिक उपलब्धि से किस प्रकार अन्तसंबधित है।
2. क्या माता–पिता की डाट फटकार और प्यार उनके जीवन को दिशा–निर्देश प्रदान करने में कोई भूमिक निभाती है।
3. माता–पिता का रवैया किशोर विद्यार्थियों के आर्थिक सामाजिक स्तर पर क्या प्रभाव डालता है।
4. क्या अभिभावक शैली में परिवर्तन लाकर किशोर विद्यार्थियों को भटकने से रोका जा सकता है।

5. माता–पिता को सामाजिक आर्थिक स्तर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि से किस प्रकार प्रभावित करता है।

समस्या कथन

"किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावक शैलियों एवं उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबध का अध्ययन"।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. लिंग भेद के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की अभिभावक शैलियों का अध्ययन करना।
3. उच्च, मध्यम, निम्न आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अभिभावक शैलियों का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्यम सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

संकियात्मक परिभाषाएँ

अभिभावक शैलीः– प्रस्तुत अध्ययन में अभिभावक शैलियों से तात्पर्य माता–पिता द्वारा बालकों के लालन–पालन हेतु अपनाई जाने वाली विभिन्न सकारात्मक, नकारात्मक एवं प्रजातांत्रिक नीतियों से हैं जिनका प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है।

शैक्षिक उपलब्धिः– पिछली कक्षा के परिणाम प्राप्तांको से ।

समाजिक आर्थिक स्तर :– प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक आर्थिक स्तर से तात्पर्य बालकों के अभिभावकों की समाज में स्थिति व उनकी प्रस्थिति से है जो परिवार का समाज में स्तर निर्धारत करता है।

परिकल्पनाएँ

1. छात्र व छात्राओं की अभिभावक शैलियों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अभिभावक शैली व उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

4. निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अभिभावक शैली व उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है।

अध्ययन के चर–

प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र एवं आश्रित चर निम्नलिखित है।

स्वतंत्र चर– स्वतंत्र चर के रूप में अभिभावक शैलियाँ, सामाजिक–आर्थिक स्तर को लिया गया है।

आश्रित चर– आश्रित चर शैक्षिक उपलब्धि है।

जनसंख्या :– जनसंख्या से तात्पर्य अनुसंधान क्षेत्र की सभी इकाईयाँ अध्ययन हेतु चुनी जाये। शोधार्थी ने अपने शोध कार्य में जनसंख्या के अन्तर्गत जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों को समाविष्ट किया गया है जिनकी कुल संख्या 34142 है इनमें 18133 छात्र व 16009 छात्राएँ है।

स्त्रोत प्रगति प्रतिवेदन वर्ष 201–11 माध्यमिक विभाग, जयपु

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया न्यादर्श में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा नवीं तक के विद्यार्थियों का चयन किया है। जिनमें 2 सरकारी विद्यालय व 2 निजी विद्यालयों के 480 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

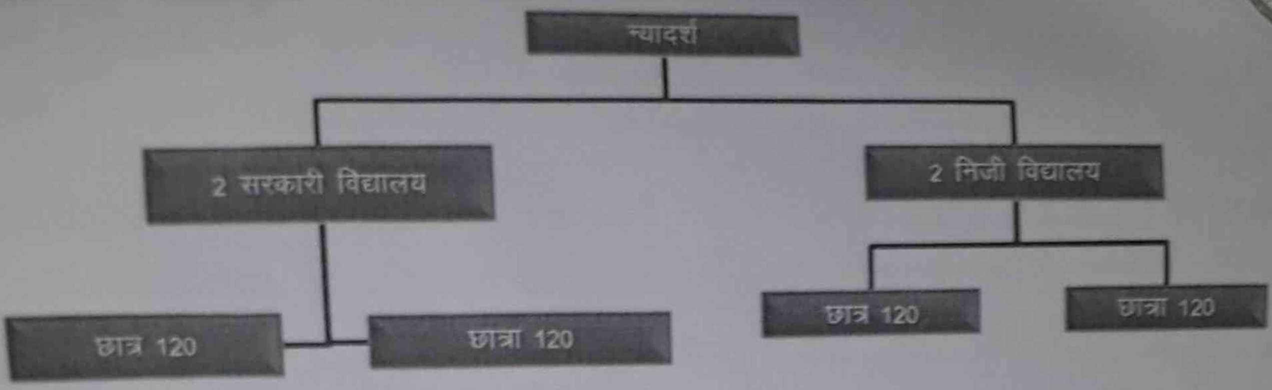

परिसीमाएँ:–

1. यह शोध केवल किशोर विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध केवल जयपुर जिले तक परिसीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कक्षा 9 के राजकीय विद्यालय व अराजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

शोध उपकरण

किसी भी समस्या के चयन के उपरान्त शोध कार्य करने के लिये उपकरणों की नितान्त आवश्यकता होती है इसलिए यह आवश्यक है कि शोध कार्य के लिये उचित उपकरणों का प्रयोग किया जाये। इन उपकरणों द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति उपरकरणों के सावधानीपूर्वक प्रयोग किये जाने पर निर्भर करती है उपकरणों का प्रयोग जितना सावधानी पूर्वक किया जाएग, परीक्षण व परीक्षा फल उतने ही स्वाभाविक होंगे।

1. सामाजिक आर्थिक स्तर परीक्षण (निर्मित एवं मानकीकृत डॉ एस. बी.कक्कड़ (पटियाला),1993
2. अभिभावक शैलियाँ:– निर्मित एवं मानकीकृत नलिनी राव (बंगलौर),2011

प्रदत्तों के स्त्रोत–

प्रदत्तों के स्त्रोत दो प्रकार के होते है:–

1. प्राथमिक स्त्रोत
2. द्वितीयक स्त्रोत

अग्रवाल आर. (2000) ने अभिभावक शिक्षा का कुछ मुख्य जातियों की लड़कियों व बालकों के समायोजन, उपलब्धि व मूल्यों से संबंधित अध्ययन किया। जिसमें पाया गया कि अभिभावक की शिक्षा का उनके समायोजन, मूल्य व उपलब्धि स्तर पर सार्थ प्रभाव पड़ता है।

पाण्डे एस के (1992) ने अभिभावक के अलग–अलग आयु स्तरों के संबंध के पारिवारिक रूपों का अध्ययन किया। इसमें निष्कर्ष रूप में पाया कि लड़कियों की आयु बढ़ने के साथ ही माताओं का दण्डित व्यवहार कम हो जाता है तथा 12–14 साल के मध्य माताओं का अनुशासनात्मक व्यवहार उच्च पाया गया।

कुमथावल्ली एस. (1999) ने प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि, पढ़ाने का माध्यम तथा समायोजन के बीच सहसंबंध का अध्ययन किया जिसका उद्देश्य बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पढ़ानें के माध्यम तथा समायोजन का प्रभाव देखना था और इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ान के तरीके तथा समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया।

जुगनू खेमलानी (1999) ने विज्ञान विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं अध्ययन आदतो में शैक्षिक उपलब्धि व आंकाक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थियों में पारिवारिक वातावरण एवं अध्ययन आदतों का आकांक्षा स्तर की अपेक्षा शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव होता है।

अग्रवाल आर. एवं कपूर एम. (1998) ने प्राथमिक स्तर पर बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों के संबंध में माता–पिता की सहभागिता का अध्ययन किया इनका उद्देश्य बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि में उसके गृह वातावरण माता–पिता द्वारा बालक को देखभाल संवेगात्मक वातावरण व परिवार का सामाजिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

वर्मा.बी.पी. एवं त्यागी आर.के.(1996) ने अध्ययन आदतों व उनकें शैक्षिक उपढि में अध्ययन का अध्ययन किया। शोध के परिणाम में पाया गया कि अंग्रेजी, हिन्दी, गणित एवं सभी में अध्ययन आदतों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध था दूसरे शब्दों में कह सकते है कि विद्यालय स्तर पर अच्छी अध्ययन आदत उच्च निषपति को सुगम बनाती है।

क्लार्क (1987) उच्च व निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले बालकों का अध्ययन किया निष्कर्ष में पाया कि उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले बालकों के अभिभावक शिक्षा, आय और व्यावसायिक स्तर में उच्च स्थान रखतें हैं और इसके विपरित है।

गर्ग आर आर (1982) ने माता–पिता द्वारा अपनाये जाने वाले तरीकों का बालकों पर प्रभाव तथा बालकों के व्यक्तित्व, उनके नैतिक मूल्यों के संबंध मं शोधकार्य किया। बालक के नैतिक व अनैतिक विकास का संबंध परिवार के साथ पाया गया है तथा बालकों का आत्म सम्प्रत्यय उनके नैतिक विकास से जुड़ा हुआ नहीं था।